इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळें.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ५३५वे ११५ [३७०]

ग्रंथ नाम पंचीकरण.

विषय म. वेदांत.

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

क्र. ७०

२३ मराठी

गप

पंचीकरण

४३४पं: ७८

नाग [illegible]

"Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

(1)

॥श्रीजयकुलगुरुनाथायनमः॥

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

॥लिंगदेह[illegible]॥शब्दस्पर्शरूपरसगंध॥हेपृथ्वीचेअंशांशशुद्ध०॥९३॥

१ (2)

वर्ण	लिंग देह	आकाश	वायु	तेज	आप	पृथ्वी	स्वाद	तामसअहंकारद्रव्यशक्तीचेंनिद्वारे॥
कृष्णवर्ण	आकाश	अंतःकरण	व्यान	श्रोत्र	वाचा	शब्द	तीक्ष्ण	सात्विकाहंकारज्ञानशक्तिचेनिद्वारे॥
नीलवर्ण	वायू	मन	समान	त्वचा	पाणि	स्पर्श	आम्ल	रजसाहंकारक्रियाशक्तिचेनिद्वारे॥
लोहितवर्ण	तेज	बुद्धि	उदान	चक्षु	पाद	रूप	कटु	रजसत्वमिश्रअहंकाराचेनिद्वारे॥
श्वेतवर्ण	आप	चित्त	प्राण	जिव्हा	शिश्न	रस	क्षार	रजतममिश्रअहंकाराचेनिद्वारे॥
पीतवर्ण	पृथ्वी	अहंकार	अपान	घ्राण	गुद	गंध	गोल्य	तामसअहंकाराचेनिद्वारे॥

"Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai"

(2A)

॥स्थूलदेहविवरण॥ एवंस्थूलदेह जाले ज्येयाप्रकारे कथिले॥१॥

स्थूलदेह	आकाश	वायू	तेज	आप	पृथ्वी
आकाश	भय	प्रसरण	निद्रा	रेत	रोम
वायू	काम	चलन	मैथुन	स्वेद	नाडी
तेज	शोक	वलन	क्षुधा	शोणित	त्वचा
आप	क्रोध	धावन	तृषा	मुत्र	मांस
पृथ्वी	लोभ	आकोचन	आलस्य	लाळ	अस्थि

॥गुणधर्मकर्मप्रकार॥

ॐ	गुण	धर्म	कर्म
आकाश	शब्द	सछिद्रत्व	अवकाशप्रदानत्व
वायू	शब्दस्पर्शगुण	चांचल्यत्व	विहरणत्व
तेज	शब्दस्पर्शरूप	उष्णत्व	पाचनत्व
आप	शब्दस्पर्शरूपरस	द्रवत्व	क्लेदनत्व
पृथ्वी	शब्दस्पर्शरूपरसगंध	कठिणत्व	धारणत्व

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

(3)

पूर्वमिहा कारणी गुणाचीं तत्त्वाची वाटनी केली त्याच प्रमाणें देही जाणावें ॥ कारणदेह विवरण्या हि प्रकारचें जाणिजे ॥						॥ आता कारणदेह जीवाचें ॥ कर्मी अवस्थात्मक सांगें ०१४॥					
कारणदेह अवस्थारूप	आकाश	वायू	तेज	आप	पृथ्वी	कारणदेहतत्त्वरूप	आकाश	वायू	तेज	आप	पृथ्वी
आकाश	मंदत्व	मत्सरत्व	धुंदत्व	कृत्रिमत्व	निमिनत्व	आकाश	अवकाश	अवकाश	अवकाश	अवकाश	अवकाश
वायू	उद्दानत्व	वासनात्व	चिंतत्व चिंतनत्व	अंबेष्टनत्व	जरत्व	वायू	मंथन	चळनत्व	दाहकत्व	चंचळत्व	स्पर्शत्व
तेज	निद्रात्व	मरणत्व	अभिलाषितत्व	विभ्रमतित्व	भ्रमत्व	तेज	आवरणत्व	शोषणत्व	प्रकाशत्व	द्रवत्व	रूपत्व
आप	वर्णत्व	कृन्यनत्व	भ्रांतित्व	प्रमादत्व	अनुयत्व	आप	निरावरणत्व	शीतळत्व	जीवनत्व	रसत्व	पिंडीकरणत्व
पृथ्वी	अवकाशत्व	अज्ञानत्व	अविवेकत्व	बंधनत्व	मूर्छित्व	पृथ्वी	परमाणुत्व	उज्वलत्व	नानावर्णत्व	धारणत्व	कठिणत्व

॥महाकारणदेहविवरण॥ ॥ऐसेंचि महाकारण॥ तूर्या दिअवस्था करून॥ १११॥

महाकारण	आकाश	वायू	तेज	आप	पृथ्वी	एवं पंचतत्वांनी आपुले अंश परस्परें विभागिले ते॥
आकाश	पूर्णत्व	सामग्रत्व	व्यापकत्व	सर्वजीवनत्व	अखंडत्व	एवं पंचतत्वांचे विभाग आकाशीं सूक्ष्मत्वें आहेत॥
वायू	अबोधत्व	परापरत्व	निर्मलत्व	अमरत्व	अजरत्व	एवं पंचतत्वांचे विभाग एकावायुतत्वीं सूक्ष्मत्वें असेत॥
तेज	अदाह्यत्व	ऊर्ध्वपदत्व	प्रकाशत्व	चैतन्यत्व	अनर्घ्यत्व	एवं पंचतत्वांचे विभाग एकातेजतत्वीं सूक्ष्मत्वें असेत॥
आप	अक्लेदनत्व	प्रसन्नत्व	सुवर्णत्वशोणितत्व	अमनत्व	कृपालुत्व	एवं पंचतत्वांचे विभाग एक्या आपतत्वीं सूक्ष्मत्वें असेत॥
पृथ्वी	अशोकत्व	कारणत्व	पवनत्व	समाधित्व	सर्वधारणत्व	एवं पंचतत्वांचे विभाग एक्या पृथ्वी ठाईं सूक्ष्मत्वें असेत॥

१ आकाश १ वायू १ तेजाचे १ आपाचे १ पृथ्वीचे
१ पूर्णत्व १ अबोधत्व १ अदाह्यत्व १ अक्लेदत्व १ अशोकत्व
१ सामग्रत्व १ परापरत्व १ ऊर्ध्वपदत्व १ प्रसन्नत्व १ कारणत्व
१ व्यापकत्व १ निर्मळत्व १ प्रकाशत्व १ शोणितत्व १ पवनत्व
१ सर्वजीवनत्व १ अमरत्व १ चैतन्यत्व १ अमनत्व १ अशोधित्व
१ अखंडत्व १ अजरत्व १ अनर्घ्यत्व १ कृपालुत्व १ सर्वधारणत्व

३

(4)

ॐ आकाश सर्वबाह्य	देह	अवस्था	अभिमानी	स्थान	भोग	गुण	मात्रा	शक्ति	भूमिका	स्वादतीष्णा	येथे अवस्था अभिमानी स्थान॥भोगमात्रा शक्ति गुण॥ भूमिकातैसे स्वादन॥ प्रगट जाले॥ ॥३१२॥
वायु	महाकारण	तूर्या	प्रत्यगात्मा	मूर्ध्नि	आनंदावभास	शुद्धसत्व	अर्द्धमात्रा	ज्ञानशक्ति	सुलीनता	आम्ल	
तेज	कारण	सुषुप्ति	प्राज्ञ	हृदय	आनंद	तमोगुण	मकारमात्रा	द्रव्यशक्ति	संश्लिष्टता	कटु	
आप	लिंग	स्वप्न	तैजस	कंठ	प्रविविक्त	सत्वगुण	उकारमात्रा	इच्छाशक्ति	गतायाता	क्षार	
पृथ्वी	स्थूल	जागृती	विश्व	नेत्र	स्थूल	रजोगुण	आकारमात्रा	क्रियाशक्ति	विक्षिप्ती	गोल्य	

३

(4A)

॥विराटदेहविवरण॥			॥ऐसेदेहचतुष्टयजीवावि॥तैसेचिहिरण्यगर्भविराटईश्वरादि॥अव्याकृतमूळमायेचे॥होनेजाले॥१९२॥							॥हिरण्यगर्भविवरण॥	
विराट देह	आकाश	वायू	तेज	आप	पृथ्वी	हिरण्य गर्भदेह	आकाश	वायू	तेज	आप	पृथ्वी
आकाश	भयस सर्व	प्रसर पासर्व	निद्रास्त० ब्रह्मलक्ष्य	रेतस्त० मेघ	रोमस्त० पर्जेतण वृक्ष	आकाश	अंतःकरण पाविष्णु	व्यान धनंजय	श्रोत्र दिशा	वाचा वन्हि	शब्दआकाशतन्मात्रा
वायू	काम सर्व	चळन सर्व	मैथुन स० [illegible]	स्वेदस्त० रात्री सर्व देव	नाडीस्त० गंगादि	वायू	मन चंद्रमा	समान देवदत्त	त्वचा वायू	पाणि इंद्र	स्पर्शतन्मात्रा वायू
तेज	शोक सर्व	वळन सर्व	क्षुधा स० काळ	शोणित स० [illegible] गतजळ	सर्वांग वृक्षील भूमि	तेज	बुद्धि कमळासन	उदान कृकल	चक्षु सूर्य	पाद त्रिविक्रम	रूपतन्मात्रा तेज
आप	क्रोध सर्व	धावन सर्व	तृषास्त० जळ	मूत्रस्त० क्षार सिंधु	मांसस्त० माती मिगत	आप	चित्त नारायण	प्राण नाग	जिव्हा वरुण	शिश्न प्रजापति	रसतन्मात्रा आप
पृथ्वी	लोभ सर्व	आकोचन सर्व	आळस स० जग विराम	लाळस्त० पासर	अस्थि स० पर्वत थोडे	पृथ्वी	अहंकार रुद्र	अपान कूर्म	घ्राण अश्विनीकुमार	गुद निऋति	गंधतन्मात्रा पृथ्वी

Project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com